विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय

वर्ग -पंचम्

विषय -हिन्दी

|| अध्ययन-सामग्री ||

पाठ-2 || दादी मां का पत्र ||

सुप्रभात बच्चों ,

पिछली कक्षा से हम 'दादी मां का पत्र' (पत्र) पढ़ रहे हैं

अब तक आपने पढ़ा कि दादी मां अपनी पोती को पत्र लिखते हुए अपने जीवन संघर्ष के बारे में बताती है ।अब आगे ...

दादी मां लिखती है मैंने पढ़ाना किया और दोनों विषयों को मन लगाकर पढ़ाया ।पढ़ाने

में गहरी रुचि थी ।जिस दिन मुझे पहला वेतन मिला वह मेरे जीवन का सबसे सुखद दिन था । वेतन लेकर मैं सीधे पिताजी के पास गई । मैंने उनके चरण स्पर्श किए और बोली "यह मेरी पहली कमाई है, इसे मैं आपको देना चाहती हूं ।" पिताजी गदगद हो गए । मेरे दोनों हाथ को अपने हाथों में लेकर बोले "मुझे तुम पर गर्व है । तुम ने सिद्ध कर दिया कि तुम आत्मनिर्भर हो । यह तुम्हारी कमाई है –"तुम्हारे अथक परिश्रम का फल ! स्वयं पर गर्व होना चाहिए कि तुमने पढ़ाई का एक भी दिन व्यर्थ जाने नहीं दिया । यही भावना सदा मन में बनाए रखो ।"

पिताजी ने मेरे भीतर स्वाभिमान पैदा किया । उन्होंने मुझे महसूस कराया कि शिक्षिका की

नौकरी सबसे अच्छी नौकरी होती है और ऐसी कमाई सबसे अच्छी कमाई है ।

इस पत्र के शेष अंश की चर्चा अगली कक्षा में करेंगे ...

निर्देश – दिए गए पाठ को ध्यान पूर्वक पढ़ें, समझें और कठिन शब्दों को अपनी कॉपी में लिखें और उसके अर्थ को याद करें ।

———